# अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

## तत्त्वज्ञान (वर्ष-2018)

## पंचम वर्ष -प्रथम प्रश्न पत्र

## संजया-25

समय:3 घंटा दिनांक-28.08.2018

पूर्णांक-100

प्र01 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दें– 10

(क) सामायिक चारित्र– काल द्वार (ख) परिहारविशुद्वि चारित्र– अंतर द्वार

(ग) छेदोपस्थापनीय चारित्र– आकर्ष द्वार (घ) सूक्ष्म संपराय चारित्र– प्रवज्या द्वार

(ड) परिहार विशुद्वि चारित्र– सन्निकर्ष द्वार (च) छेदोपस्थापनीय– उपसंपदहानद्वार

प्र02 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 6

(क) वेदन किसे कहते हैं? यथाख्यात चारित्र में कितने कर्मों का वेदंन किस अपेक्षा से हैं?

(ख) कौन से चारित्र वाले स्थितकल्पी ही क्यों होते है?

(ग) आयुष्य कर्म की उदीरणा कब नहीं होती?

(घ) संक्लिश्यमान व विशुद्धमान से आप क्या समझते हैं?

(ड) छद्मस्थ एवं केवली वीतराग में कौन सी लेश्या पाई जाती है?

(च) परिहार विशुद्वि चारित्र किन से ग्रहण किया जाता है?

(छ) यथाख्यात चारित्र किस अपेक्षा से शाश्वत है?

(ज) आकर्ष किसे कहते है?

प्र03 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 9

(क) आकर्ष द्वार– सूक्ष्मसंपराय चारित्र की प्राप्ति उत्कृष्ट नौ बार किस अपेक्षा से कही गई है?

(ख) अंतर द्वार– छेदोपस्थापनीय– अनेक जीवों की अपेक्षा 18 करोड़ा करोड़ सागर किस अपेक्षा से हैं?

(ग) स्थिति द्वार– अनेक जीवों की अपेक्षा परिहार विशुद्धि चारित्र की जघन्य स्थिति किस प्रकार बनती है?

(घ) परिणाम किसे कहते हें? यथाख्यात चारित्र का परिणाम कितना व किस अपेक्षा से हैं?

(ड) चारित्र के स्थान जब असंख्य हैं तो उनके पर्यव अनंत क्यों है? षट्स्थान पतित सें क्या तात्पर्य है?



Scanned by CamScanner

## नियंठा–25

प्र.4 किन्हीं सात प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 7

(क) स्नातक के परिणाम कितने व किस अपेक्षा से है?

(ख) पुलाक निर्ग्रंथ को प्रतिसेवी किस अपेक्षा से कहा गया है?

(ग) पांच निर्ग्रथों की संख्या में बकुश व प्रतिसेवना की कितनी संख्या बताई गई हैं?

(घ) संवृत–असंवृत का क्या तात्पर्य है?

(ड) यथासूक्ष्म बकुश से आप क्या समझते हैं?

(च) उपसंपद्हान द्वार– निर्ग्रंथ के असंयम का वचन किस अपेक्षा से हैं?

(छ) पुलाक के परिणाम वर्धमान हीयमान व अवस्थित किस अपेक्षा से हैं?

(ज) अंतर द्वार– अनेक जीव की अपेक्षा उत्कृष्ट पुलाक का संख्यात वर्ष क्यों हैं?

(झ) स्नातक का प्रकार– असबली का क्या तात्पर्य है?

प्र05 कोई छह द्वार लिखें– 18

(क) कषाय कुशील– आकर्ष द्वार (ख) बकुश – काल द्वार

(ग) बकुश – अन्तर द्वार (घ) प्रतिसेवना– उपसंपद्हान द्वार

(ड) निर्ग्रंथ– प्रवज्या द्वार। (च) बकुश– सन्निकर्ष द्वार।

(छ) बकुश– कर्मबंध, कर्मवेदन व कर्मउदीरणा।

(ज) कषाय कुशील– गति–पदवी–स्थिति।

### गीतिका– नियंठा दिग्दर्शन–10

प्र06 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 2

(क) किस सूत्र के किस उदेद्शक व शतक में पृथक पृथक छह निर्ग्रंथ बतलाए गए हैं?

(ख) निःशीथ सूत्र में आराधक व विराधक किसे कहा गया है?

(ग) छठा गुणस्थान क्यों बदल जाता है? कारण बताऐं।

प्र07 कोई दो पद्य को अर्थ सहित पूरा करें– 8

(क) सांभल न्याय.....काली जोय।

(ख) छठे गुणठाणें.....होय।

(ग) खेत–धान.....उफणोय।

(घ) दुर्लभ जन्म .....कहूं तोय।

### पूर्व कंटस्थ –ज्ञान–40

प्र08 सभी प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(क) पच्चीस बोल– भवनपति देवों के चौथे से नौंवा दण्डक अथवा सतरहवां बोल लिखें। 2

चतुर्भंगी– आश्रव का बोल अथवा बीसवां बोल। 3

(ग) चर्चा– जीव का भेद पांच से लेकर दस तक अथवा छह से लेकर ग्यारह गुणस्थान लिखें– 3



Scanned by CamScanner

(घ) तत्त्वचर्चा– कर्म पर छह द्रव्य नौ तत्व अथवा विविध विषयों पर छह द्रव्य नौ तत्व 3

(ङ) कर्म प्रकृति – स्थातर दशक– अंतिम पांच भेद व्याख्या सहित लिखें अथवा कर्म बंध की मुख्य दस अवस्थाओं में से उदवर्त्तना, अपवर्तना, निधति व उदीरणा की व्याख्या करें। 4

(च) जैनतत्त्व प्रवेश– क्षायोपशमिंक भाव अथवा द्रव्य क्षेत्र काल भाव गुण द्वार में से आश्रव संवर व निर्जरा लिखें । 4

(छ) जैनतत्त्व प्रवेश– श्रावक गुण द्वार अथवा श्राषक प्रतिमा द्वार– कायोत्सर्ग व उदिष्ट वर्जक प्रतिमा का वर्णन करें। 4

(ज) इक्कीस द्वार– अपर्याप्त अथवा अमाषक का पूरा बोल लिखें 4

(झ) बावन बोल– अठारह पाप स्थान का उदय उपशम क्षायिक क्षयोपशम निष्पन्न छह द्रव्य में कौन? नौ तत्व में कौन? अथवा उदय के तैतीस बोल में सावध कितने? निरवध कितने? 3

(ञ) लघु दण्डक– आहार द्वार अथवा समुद्घात असमुद्घात मरणद्वार लिखें। 3

(ट) लघु दण्डक – ज्ञान द्वार अथवा दृष्टि द्वार लिखें। 3

(ठ) पांच ज्ञान– हेतु उपदेश अथवा मल्लक दृष्टांत लिखें। 4



Scanned by CamScanner